ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

मनोविज्ञान में मानवीय व्यवहारों का एक अध्ययन

[1]डॉ0 कृपाल सिंह
[1]पूर्व शोधार्थी, मनोविज्ञान, एस0वी0 कालेज अलीगढ।

Received: 07 Jan 2019, Accepted: 13 Jan 2019 ; Published on line: 15 Jan 2019

Abstract

मनोविज्ञान का प्रत्येक मनुष्य के जीवन में मनोवैज्ञानिक रूप से महत्वपूर्ण योगदान रहा है और पहलू को छुआ है। मनोविज्ञान का जन्म ही उस समय हुआ था जब मनुष्य पूर्ण रूप से विकसित भी नहीं हुआ था। आदि काल का मानव चाहे वस्त्रहीन, भाषाहीन, विचारहीन तथा सभ्यताहीन था, परन्तु स्वप्न अवश्य ही देखता था। इस स्वप्न ने अवश्य ही उस मानवीय विचार करने की प्रथम अवस्था को इस रूप में जागृत किया कि स्वप्न दृश्य क्या है ? युग बीतते चले गये परन्तु इस समस्या का हल नही निकला। सभ्यता की सीढ़ी पर चढ़ते हुए समय न्रे मानव को विचारशील बनाया तथा भाषा के माध्यम से उसने विचार प्रकट करना और उन्हें समझना सीख लिया।

युग परिवर्तन ने उस आदि काल के मानव को सभ्यता तथा संस्कृति के मानव का रूप प्रदान किया। जिसके परिणामस्वरूप स्वप्न की समस्या का विश्लेषण करने के लिए मानव प्रयत्नशील बन गया। इसी प्रयन्त के परिणामस्वरूप आज के मनोविज्ञान का वैज्ञानिक स्वरूप दृष्टिगोचर होता है।

मुख्य शब्द – वस्त्रहीन भाषाहीन, विचारहीन, सम्यताहीन मनोविज्ञान में मानवीय व्यवहार।

प्रस्तावना

आज के युग में विकसित समस्त ज्ञान तथा विज्ञानों में मानव व्यवहार के दर्शन होते हैं। मानव–व्यवस्था किसी न किसी कारण– प्रतिकारण, क्रिया–प्रतिक्रिया तथा सामाजिक एवं भौतिक, परिस्थितियों से प्रभावित होती है। जिस प्रकार का प्रभाव मानव विज्ञान पर पड़ेगा, उसी प्रकार के कार्य वह करने लगेगा। उदाहरणार्थ – यदि किसी मजदूर को अच्छा वेतन, अच्छी सुविधायें तथा समय का प्रबन्ध होगा तो ऐसी स्थिति में मजदूर के शरीर और मन पर उसके मालिक के व्यवहार का अच्छा प्रभाव पड़ेगा जिससे उस मालिक के कार्य की उत्पादन क्षमता बढ़ जायेगी अर्थात, कार्यक्षमता

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

एवं उत्पादन क्षमता बढ़ेगी, जिस प्रकार मानव व्यवहार की क्रिया तथा प्रतिक्रिया का परिणाम हम देखते हैं उसी प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में मानव–मनोविज्ञान की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।[2]

वैसे तो 20वीं शताब्दी के आरम्भ में मनोविज्ञान को विभिन्न रूपों में व्यक्त किया गया है लेकिन सबसे अधिक मान्यता इस अर्थ को दी गयी है ''मनोविज्ञान, व्यवहार का विज्ञान है।'' दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि इस शताब्दी में मनोविज्ञान को व्यवहार का निश्चित विज्ञान माना जाता है।[3] जेसे– वाटसन का मानना है कि ''मनोविज्ञान, व्यवहार का निश्चित विज्ञान है।'' वुडवर्थ का कथन है कि ''मनोविज्ञान, वातावरण के सम्बन्ध में व्यक्ति की क्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है ।''[4] जबकि स्किनर की मान्यता है कि, ''मनोविज्ञान, जीवन की सभी प्रकार की परिस्थितियों में प्राणी की प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है ।'' व्यवहार का तात्पर्य है – प्राणी की सब प्रकार की गतिविधियाँ, समायोजनाऐं, क्रियाएँ एवं अभिव्यक्तियाँ। अतः इन सभी तथ्यों के आधार पर हम वुडवर्थ के शब्दों से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि, ''सबसे पहले मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा का त्याग किया। फिर उसने अपने मन या मस्तिष्क का त्याग किया । उसके बाद उसने चेतना का त्याग किया। अब वह व्यवहार की विधि को स्वीकार करता है।[5]

अतः बीसवीं शताब्दी के दूसरे एवं तीसरे दशक में मनोविज्ञान के व्यवहारवादी सम्प्रदाय का विकास हुआ। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिकन मनोविज्ञानिकों के एक समूह ने मनोविज्ञान को एक व्यवहार के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया। वाटसन महोदय इस समूह के प्रवर्तक थे। व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने जन्मजात प्रवृत्तियों के अस्तित्व को नकारते हुए सीखने पर बल दिया। उन्होंने मानव–व्यवहार को समझाने के साधनों के रूप में पशु व्यवहार के अध्ययन पर जोर दिया। यद्यपि वाटसन के व्यावहारिक तथ्यों को काफी आलोचना के रूप में देखा गया फिर भी उसकी व्यवस्थित तथा वस्तुनिष्ठ विद्या में हल, एडवर्ड टालमैन, बी0एफ0 स्किनर जैसे मनोवैज्ञानिकों पर अमित छाप छोड़ी। अतः मनोविज्ञान व्यवहार के लिए एक मील का पत्थर बन गया जिसने मानव के व्यवहार का आमूल चूल अध्ययन किया यद्यपि मनोवैज्ञानिकों में व्यवहार को व्यक्ति की प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष क्रियाओं के रूप मे स्वीकार किया लेकिन व्यवहार को अपाद मस्तक करने के लिए मनोविज्ञान ने सम्पूर्ण सहारा दिया।[6]

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

यद्यपि व्यवहार प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषता है लेकिन उसका स्वरूप परिवर्तित रूप में हमें प्रतीत होता है। 20वीं सदी के आरम्भ में मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनेक नई अवधारणायें विकसित हुयीं। उन सद्भावनाओं के कारण मनोविज्ञान की दिशा, व्यवहार की ओर उन्मुख हुयी जिसके कारण इसे व्यवहार का विज्ञान कहा जाने लगा। इसी मध्य मनोविज्ञान को पूर्ण रूप से वैज्ञानिक बनाने का प्रयत्न किया गया। व्यवहार को मानने वालों के अनुसार, मनोविज्ञान व्यवहारों का विज्ञान है। सामाजिक मानव के व्यवहार अनेक कारणों से प्रभावित होते हैं। उन व्यवहारों की अभिव्यक्ति भी अलग–अलग ढंग से होती है ।[7]

निष्कर्ष–

आत्मा से लेकर व्यवहार तक की यात्रा को वुडवर्थ ने स्पष्ट करते हुए कहा था कि मनोविज्ञान व्यवहार के स्वरूप का अध्ययन हैं । जैसा मैकडूगल ने माना है कि, ''मनोविज्ञान आचरण एवं व्यवहार का यथार्थ विज्ञान हैं।'' जबकि पावलव का मानता है कि, ''मनोविज्ञान मानव, अनुभव एवं व्यवहार का यथार्थ विज्ञान है।'' इन तथ्यों पर दृष्टिपात करने से यही विदित होता है कि मनोविज्ञान प्राणी का व्यवहार उसकी मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है। इसलिए मनोविज्ञान प्राणी के अन्तर्मन का भी अध्ययन करता है।[8] वास्तव में मनुष्य अथवा प्राणी जो कुछ भी प्रतिक्रियायें करता है वे ही उसका सामाजिक व्यवहार है इसीलिए जेम्स ड्रेवर कहता है, ''जीवन की संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के प्रति मनुष्य की सम्पूर्ण प्रतिक्रिया की सामाजिक व्यवहार है।'' अतः हमें मानना ही होगा कि मनोविज्ञान वातावरण के विभिन्न अंगों के प्रति प्राणी से सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान के अन्तर्गत प्राणियों के सामाजिक व्यवहार का वर्णन व नियंत्रित करने से सम्बन्धित अध्ययन कार्य सम्पादित किये जाते हैं तथा मनुष्य के सामाजिक व्यवहार का पूर्ण रूप से अध्ययन मनोविज्ञान के द्वारा ही सम्भव है। इसीलिए मनोविज्ञान और सामाजिक व्यवहार मनुष्य के दर्पण हैं। यदि कोई मनुष्य दूसरे के सामाजिक व्यवहार को समझ ले तो वह मनुष्य समाज का सर्वश्रेष्ठ प्राणी ही नहीं अपितु एक आदर्श सामाजिक व्यवहार वाला प्राणी होगा जो केवल मनोविज्ञान द्वारा ही सम्भव है।[9]

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. लाल, रमनबिहारी एवं रामनिवास मानव, ''शिक्षा मनोविज्ञान'', रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, 2011, पृ0 11
2. सिंह, अरूण कुमार, ''शिक्षा मनोविज्ञान'', भारती, भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2010, पृ0 23
3. त्रिपाठी, शालिग्राम, ''शिक्षा मनोविज्ञान, कनिष्क पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2008, पृ0 67
4. गुप्ता, एस0पी0 एवं अलका गुप्ता, ''उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान'', शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटस, इलाहाबाद, 2010, पृ0 101
5. पांडेय, के0पी0, ''शिक्षा मनोविज्ञान'', अभिताभ प्रकाशन, मेरठ, 1989, पृ0 97
6. Crow, L.D., and A. Crow, "Education Psychology", American Book Company, New York, 1948, Page 87
7. Mangal, S.K., "Advanced Educational Psychology", Printice Hall of India, New Delhi, 1993, Page 302
8. Mathur, S.S., "Educational Psychology", Shri Vinod Pustak Mandir, Agra, 2012, Page 287